AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2021
Impact Factor:6.3
Subject: Humanities

कीकृत पाठ्यक्रम के प्रषिक्षणार्थियों के मानवीय मूल्यों का अध्ययन

प्रो. आर.एल.भोजक
षोध निर्देषक

"प्रमिला कुमारी
पी–एच.डी. (छात्रा)

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER / ARTICLE, HEREBY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/ OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT/ OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE/UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION. FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR AT THE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE)

प्रस्तावना –

ज्ञान एक इकाई है तथा शिक्षा का उद्देश्य बच्चों को ज्ञान की एकता से परिचित कराना है। शिक्षा का यह उद्देश्य पाठ्य–विषयों को अलग–अलग रूप में पढ़ाने से पूरा नहीं हो सकता अर्थात यह कार्य तभी पूर्ण हो सकता है जब विषयों को एक–दूसरे से सम्बन्धित करके पढ़ाया जाये। इसके लिए विषयों का एकीकरण आवश्यक है। एकीकरण की अवधारणा के अन्तर्गत विभिन्न पाठ्य–विषयों को इस प्रकार परस्पर,सम्बन्धित किया जाता है कि उनके बीच किसी प्रकार का भेद न रहे। इस प्रकार ज्ञान को समग्र रूप में प्रस्तुत करना ही ज्ञान का एकीकरण है।

एकीकरण की अवधारणा से एकीकृत पाठ्यक्रम का उदय हुआ है। अमेरिकी विद्यालयों में एकीकृत पाठ्यक्रम का विकास हुआ है। एकीकरण के सिध्दान्त के अनुसार कोई विचार अथवा किया तभी प्रभावशाली एवं उपयोगी होती है जब उसके विभिन्न भागों एवं पक्षों में एकता होती है। इसीलिए एकीकृत पाठ्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न विषयों के ज्ञान को अलग–अलग खण्डो में प्रस्तुत करके सब विषयों को मिलाकर ज्ञान की एक इकाई के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

हेन्डरसन के अनुसार,"एकीकृत पाठ्यक्रम वह पाठ्यक्रम है जिसमें विषयों के बीच कोई अवरोध,रूकावट अथवा दीवार नहीं होती है।

हेन्डरसन के अनुसार, इस प्रकार का पाठ्यक्रम उन अनुभवों को देता है जिन्हें एकीकरण की प्रकिया के लिए सुविधाजनक समझा जाता है तथा जिससे बालक उस पाठ्य–वस्तु को सीखते है जो अनुभवों को

" पी–एच.डी. षोध छात्रा, जे.जे.टी. विष्वविद्यालय, चुड़ैला, झुंझुनूं।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2021
Impact Factor:6.3
Subject: Humanities

समझने में एवं उनके पुनर्निर्माण में सहायक होती है। इस प्रकार का अनुभव–प्रधान पाठ्यक्रम विषय को अलग–अलग रखने तथा उनको शीर्षकों में बॉटने का अन्त करता है एवं ऐसे विषयों को स्थान देता है जो बालक की रूचि के केन्द्र होते हैं।

किसी भी समाज द्वारा निर्धारित आदर्शों को ग्रहण करने के लिए उन आदर्शों एवं मूल्यों के अनुरूप नागरिकों के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन करना होता हैं। व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन के लिए शिक्षा सर्वाधिक सशक्त माध्यम होती है। अतः समाज के आदर्शों एवं मूल्यों का शिक्षा पर प्रभाव पड़ता है।

लोकतंत्रीय आदर्शों एवं मूल्यों को प्राप्त करने के लिए पाठ्यचर्या में उन विषयों को मुख्य स्थान दिया जाता है जिनके अध्ययन से बालकों में उत्तम मानोंवृत्तियों, अच्छे सामाजिक एवं नागरिक गुणों, आत्म अनुशासन एवं आत्म निर्भरता का विकास हो सके। इस प्रकार उपरोक्त शिक्षा के उद्देश्यों को ध्यान रखते हुए पाठ्यचर्या की संरचना की जानी चाहिए जिससे बालको में प्रारम्भिक स्तर से प्राजातांत्रिक गुणों का सुचित एवं संतुलित विकास हो सके तथा प्राजातांत्रिक मूल्यों की रक्षा हो सके।

अध्ययन का महत्व :–

किसी भी पाठ्यक्रम का महत्व उसके कार्यन्वयन से होता है। कार्यन्वयन के द्वारा ही लक्ष्यों व उद्देश्यों की प्राप्ति होती है। विशय (1976) ने बताया कि कार्यान्वयन के लिये पुनर्रचना एवं प्रतिस्थापन की आवश्यकता होती है। इसके लिये व्यक्तिगत आदतों, व्यवहार के तरीकों, कार्यक्रम के महत्व सीखने के स्थान एवं वर्तमान पाठ्यक्रम के पुनगठन एवं समायोजन की आवश्यकता होती है। सामाजिक वैज्ञानिकों ने वर्षों पूर्व पूर्ण कार्यान्वयन की जो परिभाषा दी थी, वह आज भी उपयोगी है जो निम्नवत हैं–

– स्वीकृति

– अधिक समय कार्य करना

– किसी विशिष्ट पद का एक विचार अथवा चलन

– व्याक्तियों, समूहों अथवा अन्य अनुकूलित इकाइयों से संबंधित

– सम्प्रेषण

– समाजिक संरचना का और

– मूल्यों अथवा संस्कृति की दी गई पद्धति लेथबुड (1982) ने कार्यान्वयन को एक प्रक्रिया माना हैं, जिसमें वर्तमान पद्धति एवं नवाचारों अथवा परिवर्तन अभिकर्ताओं द्वारा सुझायी गई पद्धति में अंतरों को कम किया जाता है। कार्यान्वयन व्यवहारात्मक परिवर्तन को प्रभावित करने का प्रयास करता है। यह सोपानों ;जमचेद्ध में होता है तथा शक्तियों को किसी नवाचर के प्रति तैयार करने में समय लगता है।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2021
Impact Factor:6.3
Subject: Humanities

आर्न्सिटन एवं हान्किन्स (1988) ने कार्यान्वयन को पाठ्यक्रम चक्र का एक अलग घटक माना है। इसमें कई व्यक्तियों के व्यापक कार्य शामिल हैं। यह एक अन्तक्रियात्मक प्रक्रिया है जिसमें पाठ्यक्रम निर्माता एवं उपयोग कर्त्ता के मध्य अन्तक्रिया होती है। कार्यान्वयन के द्वारा व्यक्तियों के ज्ञान,कार्य एवं अभिव्यक्तियों में परिवर्तन का प्रयास किया जाता है।

व्यवहारिक परिस्थितियों में पाठ्यक्रम के लागू होने की सीमा का पता क्रियान्वयन की अवस्था में लगाया जाता है कि व्यवहारिक रूप से क्रियान्वयन के समय क्या–क्या समस्याएं आयेगी जैसे–

–समय, अंक व क्रिया की दृष्टि से जो सापेक्षित भार प्रदान किया गया है वह उपयुक्त है या नहीं।

–शिक्षक की दक्षता–शिक्षण,शिक्षण विधियों के अनुसार पाठ्यक्रम को क्रियान्वित कर रहा है या नहीं।

–विषय वस्तु को व्यवस्थित, अनुक्रमित व रूचि कर बनाना भी शिक्षक पर निर्भर है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि पाठ्यचर्या क्रियान्वयन शिक्षण व्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण घटक है।

"मूल्य वह है, जिसका महत्व है, जिसके पाने के लिए व्यक्ति और समाज चेष्टा करते है, जिसके लिए वे जीवित रहते हैं तथा जिसके लिए वे बड़े से बड़ा त्याग कर सकते हैं।"

के अनुसार,"मूल्य वह है जो मानव इच्छाओं की तुष्टि करे।" इन्होंने मूल्यों का वर्गीकरण इस प्रकार किया है–

इनमें शारीरिक, आर्थिक एवं मनोरंजन मूल्यों को साधन (प्देजतनउमदजंस टंसनम),सौन्दर्य,बौध्दिक एवं धार्मिक मूल्यों को साध्य(प्दजतपदेपब अंसनम) तथा साहचर्य एवं चरित्र मूल्यों को साधन एवं साध्य दोनों प्रकार के मूल्यों के अन्तर्गत रखा गया है। साधन एवं साध्य मूल्यों को जैविक एवं अतिजैविक मूल्यों के रूप में बॉटा जा सकता है। अर्बन के अनुसार, जैविक मूल्य वैयक्तिक होते हैं तथा जैविक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। अतिजैविक मूल्य,उच्चतर कोटि के हाते हैं तथा इन्हें सामाजिक एवं आध्यात्मिक दो कोटियों में रखा जा सकता है।

मूल्यों के सम्बन्ध में भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टिकोण में जो मूल अन्तर है वह सुख की अवधारणा के कारण है। भारतीय दार्शनिकों द्वारा की गई प्रेयस और श्रेयस् की चर्चा पाश्चात्य जगत् में देखने को नहीं मिलती है। भारतीय सुख को सदैव अच्छा एवं प्राप्तव्य नहीं मानते हैं। इनके अनुसार मनुष्य बुध्दि एवं विवेक युक्त प्राणी है, अतः ज्ञान युक्त पक्ष से सम्बन्धित धर्म और मोक्ष, दो ही प्रमुख मूल्य हैं जिन्हें आध्यात्मिक मूल्य कहा गया है। ये निरपेक्ष मूल्य है तथा आदर्शवादियों के सत्य,शिव एवं सुन्दर इनमें समाहित हैं। इन्हें ही अर्बन की शब्दावली में अति जैविक मूल्यों की संज्ञा प्रदान की गई है।

जगत् के अन्य प्राणियों से समानता के कारण मनुष्य के जैविक मूल्य भी हैं जिन्हें भारतीय मनीषियों ने अर्थ एवं काम की संज्ञा प्रदान की है। काम का मूल्य सभी प्राणियों में होता है तथा कुछ में अर्थ का मूल्य भी पाया जाता है। अतः मानव के लिए इन मूल्यों को निम्नतर तथा गौण माना गया है। पाश्चात्य दर्शन में इन्हें

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2021
Impact Factor:6.3
Subject: Humanities

साधन मूल्य कहा गया है। इस प्रकार पाश्चात्य अवधारणा के तीनों जैविक मूल्य अर्थ एवं काम के अन्तर्गत समाहित हो जाते हैं। अतः भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टिकोणों में इन समानताओं के आधार पर समन्वय स्थापित किया जा सकता है। अतः पाठ्यचर्या में भारतीय एवं पाश्चात्य मूल्यों का समन्वय करते हुए पाठ्यवस्तु में इसका समावेश किया जाना चाहिए।

समस्या कथन :–

"एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रषिक्षणार्थियों के मानवीय मूल्यों का अध्ययन"

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रषिक्षणार्थियों के मानवीय मूल्यों का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ :–

1. एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रषिक्षणार्थियों के मानवीय मूल्यों का कोई निष्चित स्तर नहीं होता है।

अध्ययन का परिसीमन :–

1. प्रस्तुत शोधकार्य का क्षेत्र राजस्थान के बीकानेर संभाग को रखा गया है।
2. इस शोधकार्य में न्यादर्श के रूप में एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों (4 वर्षीय पाठ्यक्रम) को सम्मिलित किया गया है।
3. न्यादर्श में कुल 400 प्रशिक्षणार्थियों (छात्र 200 + छात्राएँ 200) को सम्मिलित किया गया है।

षोधविधि :–

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है क्योंकि अनुसंधान की यह एक वैज्ञानिक विधि है। इस विधि द्वारा प्राप्त निश्कर्श वैध एवं विष्वसनीय होते हैं।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :–

मानवीय मूल्य :–

प्रस्तुत षोधकार्य हेतु, प्रषिक्षणार्थियों के मानवीय मूल्य को ज्ञात करने के लिए डॉ. जी.पी.षैरी द्वारा प्रमापित मापनी को आधार माना गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी :–

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2021
Impact Factor:6.3
Subject: Humanities

प्रस्तुत षोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी मध्यमान ;ड्ढए प्रमाणिक विचलन ैक्द्ध एवं प्रतिषत एवं प्रतिषत की सार्थकता की गणना की गई है।

समंकों का सारणीयन एवं विष्लेशण :–

प्रस्तुत षोधकार्य में अनुसंधानकर्त्री ने संकलित एवं व्यवस्थित आंकड़ों का विष्लेशण जिस प्रकार किया है, उसका परिकल्पनानुसार विवरण निम्न प्रकार है –

तालिका संख्या – 1

एकीकृत पाठ्यक्रम के शहरी छात्र के मानवीय मूल्य मापनी के प्राप्तांकों का प्रतिशत एवं प्रतिशत की सार्थकता की गणना

प्राप्तांक प्रतिशत			प्रतिशत की सार्थकता		
उच्च	औसत	निम्न	उच्च	औसत	निम्न
83	17	0	81ण्12 से 84ण्21 तक	15ण्78 से 18ण्87 तक	0 से 0 तक

उक्त सारणी में शहरी छात्र के मानवीय मूल्य मापनी के प्राप्तांकों का प्रतिशत एवं प्रतिशत की सार्थकता की गणना की है जिसके अनुसार सबसे अधिक मानवीय मूल्य उच्च स्तर पर 83 प्रतिशत तथा 81ण्12 से 84ण्21 के बीच पाया गया।

तालिका संख्या – 2

एकीकृत पाठ्यक्रम के शहरी छात्राओं के मानवीय मूल्य मापनी के प्राप्तांकों का प्रतिशत एवं प्रतिशत की सार्थकता की गणना

प्राप्तांक प्रतिशत			प्रतिशत की सार्थकता		
उच्च	औसत	निम्न	उच्च	औसत	निम्न
18	82	0	15ण्46 से 19ण्86 तक	80ण्13 से 84ण्53 तक	0 से 0 तक

AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2021
Impact Factor:6.3
Subject: Humanities

उक्त सारणी में शहरी छात्राएं के मानवीय मूल्य मापनी के प्राप्तांकों का प्रतिशत एवं प्रतिशत की सार्थकता की गणना की है जिसके अनुसार सबसे अधिक मानवीय मूल्य औसत स्तर पर 82 प्रतिशत तथा 80ए13 से 84ए53 के बीच है।

प्रस्तुत अध्ययन की शैक्षिक उपयोगिता :–

1. प्रस्तुत शोध छात्र–छात्राओं के मानवीय मूल्य को प्रभावित करने वाली मनोदशाओं यथा – शैक्षिक दबाव, अध्यापन अभिवृत्ति, संज्ञानात्मक क्षमता एवं सामाजिक पर्यावरण के स्तर को सुधारने में सफल सिद्ध हो सकता है।
2. प्रस्तुत शोध शिक्षक–शिक्षार्थी के मध्य मधुर सम्बन्धों के निर्माण में शिक्षकों में सकारात्मक सोच उत्पन्न करने में सहायक हो सकता है।
3. प्रस्तुत शोध शिक्षकों की अपने अध्यापन क्षेत्र के प्रति अभिवृत्ति को बढ़ाकर एवं सन्तुष्टि उत्पन्न कर तथा वचनबद्ध बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

निष्कर्ष :–

शहरी एवं ग्रामीण छात्र–छात्राओं में मानवीय मूल्य सामान्य स्तर का पाया गया, अतः इस संदर्भ में उक्त परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

हिन्दी संदर्भ साहित्य

1. श्रीवास्तव, डी.एन. और वर्मा, प्रीति (2007). *बाल मनोविज्ञान एवं बाल विकास.* आगराः विनोद पुस्तक मंदिर. पृष्ठ संख्या–459–460
2. श्रीवास्तव, डी.एन. और वर्मा, प्रीति (2004). *शिक्षा अनुसंधान में सांख्यिकी विधियाँ.* आगराः विनोद पुस्तक मंदिर.
3. अग्रवाल, उमेषचन्द्र. (2004). *सर्व शिक्षा अभियान वृहद् लक्ष्य कमजोर प्रयास.* नई–दिल्लीः भा. आ.शि., एन.सी.ई.आर.टी., नई–दिल्लीः पृ.सं. 9
4. कपिल, एच के. (1979). *अनुसंधान विधियाँ.* आगराः द्वितीय संस्करण. हरिप्रसाद भार्गव हाऊस. पृष्ठ संख्या–23
5. कोठारी, सी.आर. (2008). *अनुसंधान विधिषास्त्र विधियाँ और तकनीकी.* आगराः न्यूरोज इन्टरनेशनल लिमिटेड पब्लिकेशन कारपोरेशन. पृष्ठ संख्या–2

ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2021
Impact Factor:6.3
Subject: Humanities

6. खान, ए.आर. (2005). *जीवन कौशल शिक्षा.* अजमेरः राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड. पृष्ठ संख्या–14
7. गुप्त, नत्थूलाल (2000). *मूल्य परक शिक्षा और समाज.* नई दिल्लीः नमन प्रकाशन. पृष्ठ –122
8. गौड़, अनिता (2005). *बच्चों की प्रतिभा कैसे निखारे.* नई दिल्लीः राज पाकेट बुक्स. पृष्ठ संख्या–14
9. चतुर्वेदी, त्रिभुवननाथ (2005). *पारिवारिक सुख के लिए हैः किशोर मन की समझ.* नई–दिल्लीः श्रीविजय इन्द्र टाइम्स अंक–8, पृश्ठ संख्या–25
10. चौबे, सरयू प्रसाद (2005). *शिक्षा मनोविज्ञान.* मेरठः इण्टरनेशनल पब्लिकेशन हाऊस. पेज न.184

Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, hereby, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website/amendments /updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally I have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and the entire content is genuinely mine. If any issue arise related to Plagiarism / Guide Name / Educational Qualification / Designation/Address of my university/college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission / Submission /Copyright / Patent/ Submission for any higher degree or Job/ Primary Data/ Secondary Data Issues, I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the data base due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Aadhar/Driving License/Any Identity Proof and Address Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper may be rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper may be removed from the website or the watermark of remark/actuality may be mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me.

Name of the Author